HISTORY, B.A. Hons. II - PAPER II

CAUSES OF THE FAILURE OF THE REVOLUTION OF 1848
1848 की क्रांति की असफलता के कारण

1848 ई० की क्रांति ने लगभग समस्त यूरोप को हिला दिया था, लेकिन फिर भी वह अपने उद्देश्यों में सफल न हो सकी। लगभग सभी देशों में अन्त में क्रांतिकारियों को असफलता का मुँह देखना पड़ा। इसकी असफलता के मुख्यतः निम्नलिखित कारण थे :-

(1) क्रांतिकारियों के उद्देश्यों में एकता का अभाव था। स्वयं फ्रांस में उदारवादियों एवं राष्ट्रवादियों में भयंकर युद्ध हुआ। हंगरी में राष्ट्रवादी तथा उदारवादी परस्पर लड़ते रहते थे। इटली में भी क्रांतिकारी एकमत नहीं थे। इसी प्रकार अन्य देशों में भी क्रांतिकारी नेता एकमत नहीं थे। अतः उद्देश्यों की भिन्नता के कारण वे संयुक्त रूप से निरंकुश राजाओं का मुकाबला न कर सके, जबकि दूसरी ओर राजाओं ने क्रांति को दबाने में आपसी सहयोग से कार्य किया। हंगरी की क्रांति को दबाने के लिए आस्ट्रिया के सम्राट को रूस के सम्राट ने सहायता दी, लेकिन क्रांतिकारियों को विदेशों से कोई सहायता प्राप्त न हो सकी।

(2) क्रांतिकारी आदर्शवादी अधिक थे। वे क्रांति के आदर्शों पर व्याख्यान दे सकते थे पर क्रांति का संचालन करने की क्षमता उनमें न थी। क्रांतिकारी विचारों के द्वारा वे जनता को उत्तेजित तो कर देते थे, परन्तु जनता को सफल क्रांतिकारी न बना सके।

(3) क्रांतिकारी दल भली प्रकार से संगठित न थे तथा अनेक नेताओं में भी संयुक्त रूप से कार्य करने का अभाव था। अतः क्रांतिकारियों की असंगठित शक्ति को संगठित निरंकुश शासकों ने कुचल दिया।

(4) क्रांतिकारी अधिकांशतः ~~हि~~ निहत्थे थे। सेनाओं पर उनका कोई प्रभाव नहीं था।

(5) ये क्रांतियाँ केवल नगरों तक ही सीमित रहीं, ग्रामीण जीवन पर प्रभाव न डाल सकीं। ग्रामीण जनता क्रांति के उद्देश्यों एवं विकास से अनभिज्ञ रही, अतः उन्होंने राजसत्ता का कोई विरोध नहीं किया। वे पूर्ववत् पादरियों एवं राज्य कर्मचारियों की आज्ञा का पालन करते रहे।

Ajanta Officer

(6) क्रांति की असफलता का एक कारण यह था कि विद्रोह करने वाली विभिन्न जातियों में आपसी सहयोग नहीं था। एक जाति दूसरी जाति को संदेह की दृष्टि से देखती थी।

(7) प्रतिक्रियावादी नेता मैटरनिख का पतन हो जाने से निर्बल नहीं हुए। प्रतिक्रियावादी राजाओं का उनकी सेना ने अन्तिम समय तक साथ दिया जिससे क्रांति को भली-भांति दबा दिया गया।

अन्त में, यह कहा जा सकता है कि 1848 ई० की फ्रांसीसी क्रांति के प्रचण्ड झटके समस्त यूरोप में महसूस किये गये। इस आश्चर्यजनक वर्ष में (1848 ई० में) यूरोप के लगभग आधे राज्यों में राजा या तो पदच्युत कर दिये गये अथवा अपने राज्यों में शासन सुधारों के लिए इन्हें विवश होना पड़ा। यद्यपि सर्वसाधारण एवं किसान तथा मजदूर वर्ग को इस क्रांति से विशेष लाभ नहीं हुआ तथापि उनमें पर्याप्त राजनीतिक जागृति पैदा हो गयी। इतिहासकार लिप्सन के अनुसार, "साधारण तथा यही कहा जा सकता है कि प्रथम क्रांति, भयंकर तानाशाही के विरोध में थी। दूसरी सामंती विशेषाधिकारों के विरुद्ध तथा ~~तीसरी~~ तीसरी मध्य वर्ग की सरकार के विरोध में थी। दूसरे शब्दों में, 1789 में कानूनी समानता स्थापित की गयी, 1830 में सामाजिक समानता स्थापित की गयी एवं 1848 में राजनीतिक समानता स्थापित की गयी।"

26.9.2020